REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

कोल जनजाति में शिक्षा की अलख और अंधविश्वास की पैठ

सीमा शुक्ला
शोधार्थी (भूगोल)
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म०प्र०)

सारांश –

कोल जनजाति अपने पारम्परिक सामाजिक संरचना से मुक्त हो रही है। आज की युवा पीढ़ी में शिक्षा के प्रति ललक दिखाई पड़ रही है। यद्यपि साधनों के आभाव में उन्हें लक्ष्य तक पहुँचने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। तथापि आज शासन और अन्य सामाज सेवी संस्थाओं की सहायता से उन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में भविष्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त हो सकेगी। इस दिशा में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर इस शोध आलेख में कुछ उपस्थापनाएँ स्पष्ट की गई है। पूरे अध्ययन के आधार पर मेंरा जो मन्तव्य (फाइन्डिंग) है वह यह है कि सब के मूल में शिक्षा है और शिक्षा के मूल में सामाजिक चेतना। इधर शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार हो रहे हैं इस नवाचारों की सुविधाएं नगर और ग्राम स्तर तक होनी चाहिए। जहाँ तक कोल जनजाति का प्रश्न है वे नगर क्या गॉव तक से दूर हैं उनका बार-बार सम्पर्क नगर और गॉव के लोगों से होना आवश्यक है। उनकें नगर और गॉव के संपर्क के लिए राज्य और केन्द्र की जो भी शिक्षा संबंधी प्रशस्तकारी योजनाएँ है उन्हें उन वक पहुँचाना आवश्यक है। आज आई०टी० के युग में इन योजनाओं को कोल जनजाति के बीच पहुँचाना कथमपि असंभव नहीं है इसके लिए मात्र इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब हम उन्हें सामाजिक समरसता के आधार पर जोड़ने का उपक्रम करें।

मुख्य शब्दः- कोल जनजातिए शिक्षा और अंधविश्वास।

प्रस्तावनाः-

कोल जनजाति अपने पारम्परिक सामाजिक संरचना से मुक्त हो रही है। आज की युवा पीढ़ी में शिक्षा के प्रति ललक दिखाई पड़ रही है। यद्यपि साधनों के आभाव में उन्हें लक्ष्य तक पहुँचने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। तथापि आज शासन और अन्य सामाज सेवी संस्थाओं की सहायता से उन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में भविष्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त हो सकेगी।

२०११ की जनगणना के अनुसार भारत में १०.४२ करोड़ जनजाति जनसंख्या है (जिसमें १.०४ करोड़ शहरी इलाकों में निवास करती है) जो कि भारत की कुल जनसंख्या का ८.६ प्रतिशत है। हालॉकि सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति तक शिक्षा की पहुँच बनाने के अनेक प्रयासों के बावजूद २०११ की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजाति में साक्षरता दर ५९ प्रतिशत है जोकि देश की कुल साक्षरता दर ७३ प्रतिशत के मुकाबले काफी कम है। इस कम साक्षरता दर के अनेक सांस्कृतिक और आर्थिक कारण रहे हैं। मैंने मध्य प्रदेश के रघुराजनगर, अमरपाटन, रामनगर, रामपुर, बघेलान,

मेहर, बिरसिंहपुर, मझगॅवा जैसी तहसील में कोल जनजाति की शैक्षणिक स्थिति को जानने का प्रयास किया। इसके लिए मैंने साक्षात्कार के माध्यम से एक प्रश्नसूची बनाई जैसे- कृपया अपने परिवार के विभिन्न पुश्तों के व्यक्तियों की शैक्षणिक उपलब्धियॉं बताएँ (पिता, स्वयं, संतान), क्या आप अभी अगली शिक्षा के लिए प्रयत्नशील हैं ? आज आप अपनी संतान को कैसी शिक्षा दिलाने के लिए प्रयत्नशील हैं/ चाहते है ? संतान को इस प्रकार की शिक्ष दिलाने के क्या कारण हैं ? (ऊँची नौकरी, समाजिक प्रतिष्ठा, अच्छे वैवाहिक रिश्ते, सुरक्षित आर्थिक एवं प्रसन्न जीवन, अन्य) क्या आप समझते हैं कि शिक्षा आधुनिक समाज में समानता लाने में सशक्त माध्यम है ? क्या आपकी जाति में शिक्षित व्यक्ति, अन्य कम या अशिक्षित से अधिक प्रतिष्ठित समझे जाते हैं ? आपकी जाति में शिक्षा के प्रति सामान्य अरुचि का कारण बताएँ ? इन सब प्रश्नों से मैने यह पाया कि अनेक उत्तरदाता शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझते हैं, उनका कहना है कि जब पढ़ने के बाद भी वही पैतृक व्यवसाय अर्थात मजदूरी करना है, तो शिक्षा प्राप्त करने में समय क्यों बरबाद किया जाए । वे बचपन से ही अपने बच्चों को मजदूरी में लगा देते हैं , क्योकि पढ़ने के बाद वे पैतृक कार्य करने से हिचकते हैं और नौकरी नहीं मिलने पर वे परिवार के लिए बोझ बन जाते हैं। मैनें सर्वेक्षण के दौरान ये पाया कि जो लोग दसवीं या बारहवीं तक शिक्षित हैं उनमें जागरुकता की अलख जाग चुकी है किन्तु किसी वजह से वे अपनी शैक्षणिक गतिविधि को आगे नहीं बढ़ा पाए जिससे उनमें कुंठा और आक्रोश ने घर कर लिया है। इस कारण वे अपना पैतृक व्यवसाय भी पूर्ण मन से नहीं कर पाते हैं जबकि उनकी तुलना में अशिक्षित कोल अधिक शान्तिपूर्वक अपने पैतृक व्यवसाय को अपना लेता है। " अशिक्षा सभी बुराईयों की जड़ है।" महात्मा गांधी का यह कथन इस जनजाति पर भी सटीक बैठता है। इस अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश कोल महिलाएँ अशिक्षित हैं लगभग ७५ प्रतिशत कोल परिवार अशिक्षा के घेरे में हैं तथा लगभग ५८ प्रतिशत बालक-बालिकाएं विद्यालय नहीं जाते हैं। कुछ कोल परिवार ऐसे भी हैं जो शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक मानते हैं और शिक्षा प्राप्त भी करना चाहते हैं लेकिन अर्थ संसाधन के अभाव में वे अपने बालकों को पढ़नें नहीं भेज पाते। छात्रवृत्ति की समस्या भी कोलों की अशिक्षा का एक प्रमुख कारण है । मैने अपने अध्ययन में पाया कि कक्षा पॉंच तक विद्यार्थियों को नियमित रुप से हमेशा छात्रवृत्ति और पाठ्य सामग्री की सहायता नहीं दी जाती है और अगर दी भी जाती है तो वह बहुत ही अपर्याप्त होती है। कक्षा छः से एम०ए० के विद्यार्थियों को नियमित रुप से छात्रवृत्ति मिलती है लेकिन वो भी मासिक रुप से नही अपितु साल में एक या दो बार इकट्ठा प्राप्त होती है, जिससे छात्रों को बार-बार छात्रवृत्ति के लिए भटकना पड़ता है साथ ही कई बार नौकरशाही की संवेदनहीनता का भी शिकार होना पड़ता है। इसी अशिक्षा के कारण वे समाज की मुख्यधारा से जुड नहीं पा रहें है किन्तु तुलनात्मक रुप से कोल जनजाति अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक जागरुक नजर आती है जैसा कि प्रतिमणि तिवारी 'ध्रुव' ने भी कहा है कि " वर्तमान में कोल आदिवासी शिक्षित एवं साक्षर होने के साथ ही जागरुक हो रहे हैं। इसके कारण वह भी खेती-किसानी का काम छोड़ शहरों की ओर पलायन कर रहें है। वह शहरी क्षेत्रों में रिक्शा चलानें का काम या भवन निर्माण से जुड़े काम में मेहनत मजदूरी कर रहें है। कोल जनजाति में शिक्षित नव युवक अब नौकरियॉं भी करने लगे हैं । वह शासकीय कार्यालयों एवं कल-कारखानों में कार्यरत देखे जा सकते हैं। उनमें भी अब अपने जीवन को उच्च-स्तर से जीने की ललक जाग उठी है। वह उच्च और समृद्ध वर्ण में रहन सहन और रीति-रिवाज को अपनाने लगे है। [9] " प्राचीन काल में तो कोल जाति को शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी पर आज समाज में आधुनिकीकरण की पूर्ण छाया पड़ चुकी है। उसी के अनुसार आज अगर एक ओर सभी के लिए समान धर्म के मार्ग खुले है तो वहीं सभी के लिए शिक्षा का मार्ग भी खुला है। आज का कोल युवा समझ गया है कि शिक्षा ही उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है और अशिक्षा अंधेरे की ओर। अब आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के प्रति जागरुक कोल जनजाति के बालक-बालिकाओं को साक्षर बनाने की दिशा में आगें और प्रयत्न होना चाहिए। आज जो साक्षरता दर है उसे और बढ़ाने की आवश्यकता है अतः यदि शासन और स्वयंसेवी संस्थाएँ इस ओर सदैव जागरुक

रही तो निश्चित ही दो दशक बाद उनकी शिक्षा दर सामान्य जातियों की तरह हो सकेगी ऐसा मेरा अनुमान है। यद्यपि वैज्ञानिक तथ्य तो यह है कि कोल जनजाति पर अभी तक जितने अध्ययन हुए है उन सभी का निष्कर्ष यही रहा है कि आर्थिक, समाजिक आधार की अपेक्षा इनके शैक्षणिक अनुपात का प्रतिशत बहुत धीर-धीरे बढ़ रहा है। जैसा कि डॉ० शिवकुमार तिवारी, डॉ श्रीकमल शर्मा ने लिखा है कि - "केवल शैक्षणिक सुविधाएँ बढ़ाने से आदिवासियों में साक्षरता एवं शिक्षा का प्रसार नहीं बढ़ रहा था। यह इसलिए कि प्रत्येक आदिवासी बालक-बालिका एक मुंह के साथ दो हाथ लेकर आता है। वह बचपन से ही अपने परिवार का कार्यकर्ता बन जाता है , कमाने लगता है। फलतः उसे या तो स्कूल भेजा नहीं जाता अथवा वह बहुत अल्पकालिक और अनियमित होता है। [२] "जब हम इसके मूल कारणों में जातें है तो देखने को मिलता है कि आर्थिक और समाजिक पिछड़ापन ही इसका मुख्य कारण है। यह अनुपात बढ़े इसके लिए इन्हें छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों से जोड़ कर इनके निवेश को बढ़ाना होगा। इस ओर इन्हें प्रेरित करने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं जैसे-आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना, ट्राइबल फॉरेस्ट डवेलर्स एमपावरमेन्ट, माइक्रो क्रेडिट फॉर सेल्फ हेल्प ग्रुप्स आदि, । इन योजनाओं के प्रति जागरुकता बढ़ाना होगा प्रायः देखा जाता है कि जागरुकता के अभाव में ये केवल मेहनत मजदूरी कर अपने पारम्परिक उद्यम तक सीमित रह पाते हैं। इस गतिरोध को दूर करने और समाज की मुख्यधारा के सामानान्तर खडें करने के लिए हमें इन्हें निरन्तर प्रेरित करना होगा।

इन सबके बावजूद आज भी इनमें अंधविश्वास की कमी नहीं आ पाई है यद्यपि यह अनुपात घटा है परन्तु जिस सीमा तक घटना चाहिए उतना हीं घट पाया है। कारण कि न केवल कोल जनजाति में अपितु भारत के अन्य समाजों में भी अभी अंधविश्वास पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ इसके मूल में जो तथ्य है वह यह है कि यह एक सार्वभौमिक सत्य बन पडा है। उदाहरण के लिए मैं कहना चाहूँगी कि बिल्ली का रास्ता काटना, कौए का मुडेर पर बैठना, स्त्री की बायॉ और पुरुष का दायॉ हाथ खुजलाना, अंधे व्यक्ति और विधवा आदि का प्रथम दर्शन निषिद्ध एवं अशुभ माना गया है, जबकि ऐसा है नही। प्रत्येक शुभ कार्य में इन्हें दूर रखा जाता है जबकि होना यह चाहिए कि इन्हें यथास्थिति एवं यथा प्रसंग के अनुसार आगे रखना चाहिए ताकि समाज से यह भ्रम भी टूट सके और वे लोग कुंठित होने से बच सकें। इस संदर्भ में प्रदीपमणि तिवारी 'ध्रुव' का कहना है कि "कोल जनजाति के लोग भी अन्य के सामान झाड़-फूँक पर विश्वास रखते हैं। घर के किसी सदस्य के बिमार हो जाने पर वह डॉक्टरी इलाज कराने के बजाय गुनियों, ओझाओं की शरण में जाकर स्वस्थ होने की कोशिश करते हैं। उन्हें यह विश्वास होता है कि किसी बला ने उनका पीछा किया है या किसी देवता ने मारा है। अतः इससे मुक्ति पाने के लिए ही वे ओझाओं की शरण में जाते है। वे भूत-प्रेत पर भी विश्वास करते है। [३] "दरसल न केवन भारतीय समाज अपितु विश्वपटल के सभ्य एवं समृद्ध देशों के नागरिकों में भी शुभ-अशुभ की भावना पाई जाती है, यह भावना मूलतः अज्ञान के प्रति भय और कौतूहल की मिली जुली अभिवृति की परिचायक है। कोल जनजाति जिनका जीवन अभाव और कष्ट में बीतता है तथा जो सरल और सीधे स्वाभाव वाले हैं, उनके जीवन में अंधविश्वासों का महत्व या पैठ एक सामान्य घटना है। प्रत्येक कोल जनजाति का यह विश्वास है कि इस संसार का रचयिता कोई अलौकिक शक्ति है । इस शक्ति को वे ईश्वर कहते हैं। संसार की सभी जड़ एवं चेतन वस्तुओं का निर्माण भगवान द्वारा ही हुआ है। मनुष्य का जन्म एवं मरण भी भगवान की इच्छा के आधार पर होता है। मनुष्य को सुख-दुखः देने वाला भगवान ही है। जैसा कि डॉ० महेश चन्द्र शांडिल्य ने लिखा है कि "कोल तन्त्र-मन्त्र, झॉड-फूँक में अधिक विश्वास करते हैं। पण्डा, गुनिया, ओझा, तन्त्र-मन्त्र, झॉड-फूँक के जानकार एवं विशेषज्ञ होते हैं। वाह्य बाधाओं, असाध्य रोग होने पर कोल इन जानकारों की शरण लेते हैं। वे अपनी तांत्रिक शक्तियों से इलाज करते हैं। ठीक होने पर पूजा-बलि दी जाती है। ग्राम ढाड़ा सीधी के मोतीलाल ठकुरिया कोल ने तन्त्र-मन्त्र संबंधी जानकारी बतलाई। दीपावली के बाद गुरु आपने शिष्यों को मन्त्र-चौपाईयां याद करने के लिए देता है, जो शिष्य मन्त्र-दीक्षा में खरा उतरता है या योग्य होता है उसे 'पाठ चेला' कहते है। देव प्रवोधिनी (देव उठनी ग्यारस) की रात्रि में गुरु शिष्यों को लेकर किसी

नदी के किनारे जाते हैं। शिष्य गहरे पानी में खड़े हो जाते है। गुरु मन्त्र पढ़ते हुए भूरे कद्दू (वरिहा कोहडा) की फाँके शिष्यों के पास फेंकता जाता है, जो शिष्य वे टुकडे पाता है, वह खा लेता है, इससे मंत्र सिद्ध हो जाता है।.....इस क्रिया से सम्बन्धित देवता प्रसन्न रहते है और उनके आर्शीवाद और मंत्र के प्रभाव से रोगो का निदान आसानी से हो जाता हैं। ४ " अशिक्षित कोल श्भगवानश को श्भगमानश्कहते हैं। भूकंप, बाढ़, सूखा तथा किसी महामारी प्लेग या हैजा आदि को ये भगवान का प्रकोप मानते हैं। इनका मानना है कि प्राकृतिक आपदाएँ ईश्वर के रुष्ट होने पर दिया जाने वाला दण्ड है जिसका उपाय झाड-फूँक, नर एवं पशुबलि जैसे कर्मकाण्डों के माध्यम से ही सम्भव है। और प्रायः देखा गया है कि इस झॉड़-फूँक का शिकार स्त्रियॉ ही होती हैं, और उन्हें इस अंधविश्वास के चलते अपने प्राणों की बलि देनी पड़ जाती है। चूंकी भौतिक घटनाओं को कोल जनजाति ईश्वर प्रदत्त मानती है अतः इन सभी घटनाओं को अच्छी या बुरी मानकर संतोष प्राप्त कर लेती है।

कोल जनजाति मूर्ति पूजा में विश्वास रखती है। यह भगवान के साकार रुप को स्वीकारती है। हिंदू देवी-देवताओं के अतिरिक्त इनके कुछ स्थानीय देवी-देवता होते हैं जैसे- बरम बाबा, महुआ देव, भुइया देव, दुल्हा देव एवं बाही ससूर आदि। कोल जनजाति के लोगों का मानना है कि बाही ससूर देवता की पूजा करने से खेतों मे फसल बहुत अच्छी होती है। अशिक्षित कोल समूह अपनी फसल की उच्च उत्पादकता हेतु आधुनिक कृषि एवं वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने के वजाए कर्मकाण्ड करने पर जोर देता है जिसका एक मुख्य कारण रहा है समाज की मुख्यधारा से इनका अछूता रहना। इसी प्रकार घरों में संग्रहित गल्ले को घुन या कीड़े -मकोडों से रक्षा के लिए 'चितकौर देवी' की पूजा करते हैं। कोल जनजाति में इस प्रकार की सभी छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान के लिए घर का सबसे बड़ा व्यक्ति जादुई या धार्मिक कृत्य को पूरा करता है लेकिन महामारी, गंभीर अकाल आदि बड़ी समस्या के समाधान के लिए गुनिया की सहायता ली जाती है। वह जादुई या से सिद्ध हस्त समझा जाता है। मैंने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट रुप से पाया है कि कोल में जनजाति अंधविश्वास, जादू-टोना कूट-कूट कर भरा है। वह इसके आदी से हो गये हैं तथा इसे अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं इसीलिए वे जो भी कार्य करते हैं उसमें इस बात का अवश्य ध्यान रखते हैं कि यह उनके लिए उपयुक्त है या अनुपयुक्त। कोलों की अंधविश्वास की जड़ें उनकी अज्ञानता में फैली हुई हैं। ये उनकी भय, निराशा, शिक्षा और ज्ञान की कमी को दर्शाता है परन्तु भारत सरकार ने इनके अंधविश्वास को दूर करने के लिए कई योजनाएँ चलाई हैं जैसे- "पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप फॉर शैड्यूल ट्राइब्स स्टूडैन्ट, हॉस्टल फॉर शैड्यूल ट्राइब्स गर्ल्स एण्ड ब्यायज, इस्टैबलिशमेन्ट ऑफ आश्रम स्कूल इन ट्राइबल सब प्लान एरियास, राजीव गांधी नेशनल फैलोशिप, टॉप क्लास एजूकेशन एण्ड नेशनल ओवरसीज स्कॉलरशिप फॉर शैडयूल ट्राइब्स " ५ आदि। जिसके द्वारा प्रकृति के प्रति इनके अनसुलझे रहस्य को सुलझाया जा सकता है और अंधविश्वास की जड़ पर प्रहार किया जा सकता है। आखिर अंधविश्वास की तानाशाही मूर्खता के साम्राज्य में ही व्याप्त होती है।

निष्कर्षः-

कुल मिलाकर कोल जनजाति का शैक्षिक एवं सामाजिक ढांचा अपेक्षाकृत अभी कमजोर है। इसे सशक्त बनाने के लिए शिक्षा के प्रति जागरुकता और समाजिक चेतना के लिए कारगर उपायों एवं संशाधनों को लगाना होगा क्योंकि जब तक सामाजिक जागृति नहीं आएगी तब तक शिक्षा और खासकर मूल्य शिक्षा के प्रति उनमें चेतना जगाना कथमपि संभव नहीं होगा इसीलिए शिक्षा और सामाजिक जागरुकता के प्रादर्श (मॉडल) के आधार पर इनके बीच में कार्य करना अधिक समीचीन होगा। पूरे अध्ययन के आधार पर मेंरा जो मन्तव्य (फाइन्डिंग) है वह यह है कि सब के मूल में शिक्षा है और शिक्षा के मूल में सामाजिक चेतना।

इधर शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार हो रहे हैं इस नवाचारों की सुविधाएं नगर और ग्राम स्तर तक होनी चाहिए। जहॉ तक कोल जनजाति का प्रश्न है वे नगर क्या गॉव तक से दूर हैं उनका बार-बार सम्पर्क नगर और गॉव के लोगों से होना आवश्यक है। उनकें नगर और गॉव के संपर्क के

लिए राज्य और केन्द्र की जो भी शिक्षा संबंधी प्रशस्तकारी योजनाएँ है उन्हें उन वक पहुँचाना आवश्यक है। आज आई०टी० के युग में इन योजनाओं को कोल जनजाति के बीच पहुँचाना कथमपि असंभव नहीं है इसके लिए मात्र इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब हम उन्हें सामाजिक समरसता के आधार पर जोड़ने का उपक्रम करें।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. प्रतिमणि तिवारी 'ध्रुव' मध्यप्रदेश के आदिवासी एवं रीति-रिवाज, पृ० १०१, नमन पब्लिकेशन, २००६
2. डॉ० शिवकुमार तिवारी, डॉ० श्रीकमल शर्मा, मध्यप्रदेश की जनजातियाँ, पृ० २२१, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, १९९९
3. प्रतिमणि तिवारी 'ध्रुव' ,मध्यप्रदेश के आदिवासी एवं रीति-रिवाज, पृ० १०४, नमन पब्लिकेशन, २००६
4. डॉ० महेशचन्द्र शांडिल्य, कोल, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद, भोपाल १९९९
5. प्रेस इनफॉरमेशन ब्यूरो।
6. वाल्टर जी० ग्रिफिय्स, द कोल ट्राइब ऑफ सेन्ट्रल इंडिया, १९४६
7. राधवैया व्ही०, ट्राइबल्स ऑफ इंडिया, न्यू डेल्ही, भारतीय आदिम जाति सेवक संध, १९७२
8. देवगांवकर, एस०जी०, कोरकू ट्राइबल्स, कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, १९९०.

सीमा शुक्ला
शोधार्थी (भूगोल) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म०प्र०)